



जेफ़

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

कोई भी चीज़ तब तक पूरी नहीं होती जब तक वह पहुँच न जाए।

एक गीत उसी क्षण अस्तित्व में आ जाता है जब वह लिखा जाता है, पर उसका महत्व उसी क्षण होता है जब कोई उसे सुनता है। एक इलाज किसी प्रयोगशाला की नोटबुक में मौजूद रहता है, पर वह जान तभी बचाता है जब वह किसी ऐसे गाँव की दवा की दुकान की अलमारी तक पहुँचता है जहाँ कोई बड़ा आदमी कभी नहीं गया। सृजन चिंगारी है। वितरण वह आग है जो फैलती है।

जेफ़ ने वाणिज्य का आविष्कार नहीं किया। उसने न किताबों का आविष्कार किया, न ढुलाई का, और न इंटरनेट का ही। जो बात उसने लगभग किसी और से पहले और उससे कहीं ज़्यादा पूरी तरह समझ ली, वह यह थी कि भविष्य उनका नहीं होगा जो सबसे ज़्यादा चीज़ें बनाते हैं। वह उनका होगा जो चाहने और पाने के बीच की दूरी घटा देते हैं।

यह एक अजीब किस्म की शक्ति है। यह अपनी घोषणा नहीं करती। कोई किसी डिलीवरी ट्रक की याद में स्मारक नहीं बनाता। कोई किसी गोदाम के लिए गान नहीं रचता। और फिर भी गोदाम आज रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर ज़्यादातर संसदों से भी ज़्यादा असर रखते हैं।

अब वह बात जो लोगों को बेचैन कर देती है, अगर वे उस पर काफ़ी देर तक सोचें: वितरण को इससे कोई मतलब नहीं कि वह क्या वितरित कर रहा है। वह कविता और प्रचार, दोनों को एक ही उदासीन कुशलता से ढोता है। वह दवा और ग़लत सूचना, दोनों को एक ही नली से नीचे भेजता है। इस माध्यम की कोई अंतरात्मा नहीं होती — केवल प्रवाह-क्षमता होती है। यानी इस युग का असली नैतिक बोझ बनानेवालों पर नहीं, बल्कि उस पर आ पड़ता है जो द्वार पर क़ाबू रखता है।

इतिहास के अधिकांश हिस्से में, जिसके पास खेत होता था, धन उसी का होता था। फिर जिसके पास कारखाना होता था, धन उसी का हो गया। अब जिसके पास रास्ता है — एल्गोरिद्म, प्लेटफ़ॉर्म, आखिरी मील — उसके पास वह चीज़ है जो कारखाने के मालिक के पास भी कभी नहीं थी: यह तय करने की शक्ति कि ज़्यादातर लोग आज क्या देखेंगे, और क्या कभी नहीं देख पाएँगे।

यह कोई छोटी शक्ति नहीं है। यह एक पुरानी शक्ति का सबसे नया रूप है, और इसे न पूजा के भाव से और न घबराहट के भाव से, बल्कि सहज दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

इस सारी सहूलियत के भीतर एक क्रीमत दबी हुई है, और वह ग्राहक पर नहीं पड़ती। वह बनानेवाले पर पड़ती है, चुपचाप, एक-एक सौदेबाज़ी के साथ। हर रचनाकार जो सबों तक पहुँचना चाहता है, आखिरकार यह जान लेता है कि “सबों” की एक क्रीमत होती है, और वह क्रीमत नियंत्रण में चुकाई जाती है। विचार तुम्हारे पास रहता है। शर्तें तुम सौंप देते हो।

मैंने अपनी ज़िंदगी का इतना हिस्सा चीज़ों को — उत्पादों, भरोसे, लोगों, कहानियों को — सरहदों और भाषाओं के आर-पार ढोने में बिताया है कि जान सकूँ कि यह निराशावाद नहीं है। यह तो बस पैमाने का स्वभाव है। कोई भी चीज़ एक खास आकार से आगे बढ़ते ही अपने से बाहर की किसी चीज़ के आगे जवाबदेह हुए बिना नहीं बढ़ती।

तो यही जेफ़ का पत्ता है। गोदाम नहीं। एल्गोरिद्म नहीं। दौलत भी नहीं।

वितरण की शक्ति — वह ख़ामोश, अनसराही ताक़त जो हर एक दिन तय करती है कि कौन-सी कहानियाँ अपना सफ़र पूरा करती हैं और कौन-सी दराज़ में ही दम तोड़ देती हैं।

फर्दिनांदो